पुस्तक परिचय

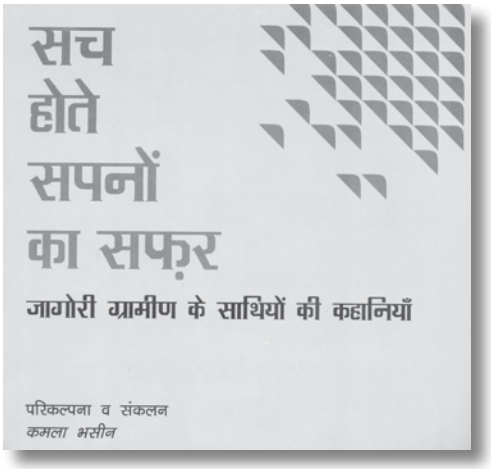

आशा

"*मेरा नाम आशा है।* 1998 में मेरा परिवार रक्कड़ आया। मां ने हर रविवार के दिन निष्ठा नामक संस्था की संचालक डॉ. बारबरा के घर काम करना शुरू कर दिया। मुझे सिलाई का थोड़ा बहुत ज्ञान था सो मैं भी कभी-कभी मां के साथ काम पर चली जाती थी और वहां पर मां के काम में हाथ बंटाती। हमारे पड़ौस में एक लड़की रहती थी, सुमन। उससे मेरी दोस्ती हो गई।

एक दिन मुझे सुमन ने बताया कि यहां पर *जागोरी* नाम की संस्था काम करना चाहती है और उन्हें लोगों की ज़रूरत है। उसने मुझे प्रार्थना पत्र देने को कहा। अगले दिन मुझे *जागोरी* में बुलाया गया और कहा कि शिमला में सामाजिक लिंग भेद पर 10 दिन की कार्यशाला है जहां मुझे सुमन के साथ जाना है।

शिमला में 10 दिन की ट्रेनिंग ली जहां मैंने समझा कि सामाजिक लिंग भेद क्या है। शिमला से वापिस आई तब *जागोरी ग्रामीण* ने मुझे कुछ और काम करने को दिया। अब हमें *जागोरी* के बारे में आस-पास के गांवों में बताना था।

शुरू में सब रिश्तेदारों ने मेरा इस तरह की नौकरी करने का विरोध किया। *जागोरी* में आने के बाद मुझे अपनी बात कहने की हिम्मत मिली। काम करते-करते मेरे अन्दर बहुत से बदलाव आए हैं। मैं अब सिर्फ़ एक पहलू के बारे में नहीं सोचती। मेरे शौक भी बदले हैं।

मेरे इस तरह के काम करने से मैं पूरे समाज को या गांव का बदलने का तो दावा नहीं कर सकती, पर हां मैंने अपने आप को बदला है। मेरी मां भी यह बात कहती हैं कि "मेरे समय में अगर ऐसी संस्थाएं होती तो मैं कभी भी शादी नहीं करती।"

बबली देवी

"*मेरा नाम बबली देवी है।* मेरा गांव शाहपुर से 30 कि.मी. दूर है। मैं इस संस्था में यह सोचकर आई कि मुझे भी अच्छी जानकारी प्राप्त होगी और मुझे आगे सीखने का मौका मिलेगा।

जब मैं *जागोरी* शाहपुर में आती थी तो मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं आगे पढ़ाई कर सकती हूं। मैंने एक बार मंजू दीदी और सुधा दीदी से बात की और उन्हें कहा, मैं आगे पढ़ाई करना चाहती हूं। उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया। उसके बाद मैंने कमप्यूटर सीखा। कमप्यूटर सीखकर मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया।

जागोरी ग्रामीण में नौकरी के बारे में मेरे परिवार वालों को यह लग रहा था कि अब तो हमारी लड़की को नौकरी मिल गई है। अब अगर हमारे पास कभी कुछ नहीं होगा तो हमारी लड़की हमें संभाल सकती है।

मैंने अपने काफ़ी सारे हुनर चमकाए हैं। मैंने पढ़ाई की, नौकरी की और अब मैं और पढ़ाई करके और कुछ हासिल करना चाहती हूं। अब नेतृत्व की भावना और गुण आए हैं। अब मैं भी अपने आप को क़ाबिल समझती हूं। अब मेरे गांव के सब लोग कहते हैं कि हमारे गांव में यह पहली लड़की है जो नौकरी के साथ-साथ पढ़ाई भी कर रही हैं।

जागोरी के अन्दर का माहौल बहुत ही अच्छा है। यहां किसी को बड़ा-छोटा नहीं समझते। सभी को आगे आने का मौका देते हैं। सभी मिलकर एक दूसरे की मदद करते हैं। मैं आशा करती हूं मैं भविष्य में भी जो सोचूंगी वो भी *जागोरी ग्रामीण* की मदद से पूरा कर पाऊंगी।"

पुस्तक की एक झलक

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक	:	सच होते सपनों का सफ़र
परिकल्पना व संकलन	:	कमला भसीन
भाषा	:	हिन्दी
प्रकाशक	:	जागोरी ग्रामीण
पृष्ठ	:	248

पुस्तकों के महासागर में बड़े-बड़े मंचों पर चमकने और उपलब्धियां हासिल करने वाले सितारों के साक्षात्कारों और जीवनियों की भरमार है लेकिन ज़मीन से जुड़ कर काम करने वाले छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं को उनके सीमित दायरे के बाहर कोई नहीं जानता। किसी भी नेता, संस्था या आंदोलन के पीछे इन्हीं अनाम कार्यकताओं की मेहनत होती है। ऐसे ही कुछ अनाम चेहरों को नाम और पहचान देने की कोशिश इस पुस्तक में की गई है।

हिमाचल प्रदेश में सक्रिय—*जागोरी ग्रामीण* के छोटे बड़े सभी कर्मियों के जीवन के ऊबड़-खाबड़ रास्तों की कहानियां इस किताब में उन्हीं के अनगर शब्दों में प्रस्तुत की गई हैं। ग़रीबी व गांव-देहातों में पले-बढ़े, पारम्परिक रीति-रिवाजों और सोच की बेड़ियों से बंधे इन युवाओं के छोटे-छोटे क़दम भी उनके परिवेश के लिए किसी क्रांति से कम नहीं है।

परिवार को समझा-बुझाकर, सामना या विरोध कर घर से बाहर निकलना, नारीवादी संस्था से जुड़ना, नए मूल्यों को जानना और सीखना, अपने जीवन की दिशा और फ़ैसले अपने हाथों में लेना, भीतर छिपी अनेकानेक असुरक्षाओं, शंकाओं और डरों से जूझना और फिर बड़ी सादगी और सच्चाई से उसे बयान करना, वाकई क़ाबिले तारीफ़ है। इतनी ही तारीफ़ की हक़दार कमला भसीन हैं जिन्होंने साधारण में असाधारण की खोज की। उन्हें सामने आकर अपनी बात कहने और किताब के पन्नों पर छपने का मौक़ा दिया।

'सच होते सपनों का सफ़र' ग्रामीण परिवेश से निकली किताब है। इसकी भाषा सरल, भावनाएं सच्ची और कोशिश ईमानदार है। ये छोटे-छोटे संघर्ष, उन्हीं परिस्थितियों में जी रहे युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बन सकते हैं। व्यक्तिगत अनुभवों की कथाएं पुस्तक को पढ़ने में रोचक बनाती हैं। कमला भसीन और आभा भैया के वक्तव्यों से संस्था और कार्यकर्ताओं की पृष्ठभूमि, उनके लक्ष्य और भविष्य के स्वप्न उजागर होते हैं।

कुल मिलाकर यह पुस्तक न सिर्फ़ धरातल से जुड़ी संस्थाओं, कार्यकर्ताओं के लिए अच्छी पठन सामग्री साबित हो सकती है बल्कि शहरी मध्यवर्गीय संस्थाओं व कर्मियों को ग्रामीण सच्चाइयों से रूबरू कराने का भी उपयोगी साधन हो सकती है।

वीणा शिवपुरी

वीणा शिवपुरी *लेखिका व हम सबला की वरिष्ठ सदस्या हैं।*

प्रतियों के लिए संपर्क करें:

अनूप, द्वारा जागोरी ग्रामीण, ग्राम रक्कड़ सिद्ध बाड़ी, ज़िला कांगड़ा-176057 हिमाचल प्रदेश

महावीर सिंह, जागोरी
फ़ोनः 011-26691219/20 • distribution@jagori.org